History Semester - I
M.J. - I

प्र0 – दर्शन से आप क्या समझते हैं, इसके स्वरूप एवं प्रकृति का वर्णन करें?

उत्तर – दर्शन या दर्शनशास्त्र का तात्पर्य एक ऐसा चिंतशील ज्ञान जिससे मनुष्य अपनी जिज्ञासा को शांत करता है। यह मुख्यता दो शब्दों के योग से बना है। ये शब्द अंग्रेजी में दर्शनशास्त्र को Philosophy कहा जाता है, जिसका तात्पर्य है प्रज्ञान के प्रति प्रेम इसका अर्थ होता है, प्रेम तथा ज्ञान के प्रति प्रेम ही दर्शन या Philosophy है। इस स्थिति में ज्ञान के प्रति प्रेम या अनुराम रखने वाला दार्शनिक या Philosophy कहलाता है।

दरअसल चिंतनशीलता मनुष्य की मौलिक विशेषकर है जो सामान्यता अन्य प्राणियों में नहीं पाई जाती है। चिंतनशीलता के ही कारण मनुष्य, अपने तथा विश्व के विषय में यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है। वह अपने वर्त्तमान के अतिरिक्त भूत तथा भविष्य के प्रति को सचेत रहता है। मनुष्य में अन्य प्राणियों की तुलना में बुद्धि अधिक होती है। इसी बुद्धि द्वारा मनुष्य अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के युक्तियुक्त प्रयास को ही दर्शन कहते हैं।

दर्शनशास्त्र की विशिष्ट एवं जटिल प्रकृति होने के कारण कोई, एक परिभाषा प्रस्तुत करना प्रायः असंभव है। विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण से दर्शनशास्त्र की अनेक परिभाषा प्रतिपादित की है। कुछ दार्शनिकों ने इसकी परिभाषा निर्धारित करते समय मूल्यों को अधिक महत्व दिया है, जबकि कुछ अन्य दार्शनिक मनोवैज्ञानिक तथ्यों को आधार मानते हैं। दर्शन की व्युतपत्ति ''द्वश'' धातु से हुई है जिसका अर्थ है – 'देखना'। देखना का अर्थ संदर्भानुसार व्याख्या करना, विवेचना करना, वर्णन करना एवं मूल्यांकन करना आदि होता है। दर्शनशास्त्र भी ''देखने'' के उक्त सभी कार्य करता है। वह संसार को उसकी समग्रता में किन्ही मूलभूत अवधारणाओं के संदर्भ में व्याख्या करता है। आत्मा तथा ज्ञान की विवेचना करता है। दृश्य–जगत की मुख्य संवृतियों, यथा–दुःख, निरर्थकता तथा विसंगति आदि का वर्णन करता है। आचरण के मूल्यांकन हेतु नैतिक–नियमों को निर्धारण करता है। दर्शनशास्त्र के समस्त कार्य बौद्धिक है और प्रज्ञान के प्रति दार्शनिक प्रेम दर्शाते हैं।

दर्शन से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएं निम्नलिखित हैं –

(1) **वैरेट के अनुसार –** ''निष्कर्षो की विशिष्ट अर्न्तवस्तु नहीं बल्कि उन पर पहुंचने की प्रेरणा तथा विधि ही उन्हें दार्शनिक कहलाने योग्य बनाती है।''

(2) **विण्डवैड के अनुसार –** ''दर्शन सार्वमौम मूल्यों का आलोचनात्मक विज्ञान है।''

(3) **जॉन डिवी के अनुसार –** ''दर्शन ऐसे ज्ञान की प्राप्ति का द्योतक है जो जीवन के व्यवहार को प्रभावित करता है।''

(4) **ब्राइटमैन के अनुसार –** ''दर्शन अनुभव के विषय में निष्कर्षो का समूह में होकर मूलरूप से अनुभव के प्रति एक दृष्टिकोण या पद्धति है।''

(5) **डुकासे के अनुसार –** ''दर्शन समीक्षा का एक सामान्य सिद्धान्त है।''

(6) **हर्बट स्पेन्सर के अनुसार –** ''दर्शन प्रत्येक वस्तु से सम्बन्धित है। वह एक सार्वमौम विज्ञान है।''

उपर्युक्त वर्णित परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि दर्शन शास्त्र के अर्थ एवं स्वरूप के विषय में दार्शनिकों में पर्याप्त मतभेद है। जहां एक ओर कुछ दार्शनिक दर्शनशास्त्र समीक्षात्मक स्वरूप को प्रतिपादित करते हैं, वहीं दूसरी ओर अन्य दार्शनिक दर्शनशास्त्र के समन्वयात्मक स्वरूप को प्रतिपादन करते हैं, परन्तु दोनों में से किसी भी दृष्टिकोण को पूण्र रूप से सही नहीं जाना जा सकता, क्योंकि दोनों ही दृष्टिकोण एकांगी हैं।

दर्शनशास्त्र समीक्षात्मक होने के साथ ही साथ समन्वयात्मक है। दर्शनशास्त्र का उद्देश्य सत्य की खोज है। यहां यह स्पष्ट कर देना है कि भले ही सत्य या ज्ञान प्राप्त हो या न हो परन्तु दार्शनिक निरंतर ज्ञान एवं सत्य की खोज में संलग्न रहते हैं। दार्शनिक ज्ञान के स्वामित्व के दावा नहीं करते, परन्तु ज्ञान के प्राप्ति के प्रति प्रेम एवं लगन तथा प्रयास का दावा अवश्य करता है। हम कह सकते हैं कि दर्शनशास्त्र एक दार्शनिक प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत कुछ विशिष्ट समस्याओं को विशिष्ट दृष्टिकोण तथा विशिष्ट विधियों द्वारा हल किया गया है। विशिष्ट निस्कर्ष एवं परिणाम प्राप्त किये जाते हैं।

विषय वस्तु :

दर्शनशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषाओं के विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि दर्शनशास्त्र की विषय वस्तु प्राप्त व्यापक है। ज्ञान के इस क्षेत्र में दार्शनिक समस्याओं के साथ ही साथ भौतिक तथा सामाजिक विज्ञानों की मूल मान्यताओं तथा अब तक प्राप्त निष्कर्षो का भी अध्ययन किया जाता है। इसी तथ्य को विशिष्ट ढग से सी.डी. ब्रोड ने इन शब्दों में प्रस्तुत किया है – ''दर्शन का लक्ष्य विभिन्न विज्ञापों के निष्कर्षो को लेकर उनमें मानव जाति के धार्मिक तथा नैतिक अनुभवों को जोडत्रकर और विश्व की प्रकृति तथा उसमें हमारी स्थिति और भविष्य के विषय में सामान्य निष्कर्षो पर पहुंचने की आशा रखते हुए सम्पूर्ण का चिंतन करता है।''

प्रकृति :

किसी भी विषय का व्यवस्थित अध्ययन करने के लिए उसकी प्रकृति को जानना परमावश्यक होता है। उदाहरण के लिए जब हम सामाजशास्त्र या राजनीतिशास्त्र के विषय में विचार करते हैं तो स्पष्ट रूप में कहा जाता है कि इसकी प्रकृति का प्रश्न उठता है। दर्शनशास्त्र ना विज्ञान है और न ही कला है। दर्शनशास्त्र की प्रकृति अपने आप दार्शनिक है।

दार्शनिक प्रकृति का आशय यह है कि दर्शनशास्त्र का अध्ययन दार्शनिक समस्याओं को दार्शनिक दृष्टिकोण के दार्शनिक विधियों को अपनाकर किया जाता है। पुनः स्पष्ट करने के लिए क्रमशः दार्शनिक समस्या दार्शनिक दृष्टिकोण तथा दार्शनिक विधियों का अर्थ स्पष्ट करना होगा।

यह स्पष्टीकरण निम्नलिखित हैं –

(1) **दार्शनिक समस्या –** दर्शनशास्त्र की समस्याऐं सामान्य होती है, उन समस्याओं को रखा जाता है, जो दार्शनिक विज्ञानों से सम्बन्धित है। मुख्य दार्शनिक विज्ञान है – प्रभावशास्त्र, तर्कशास्त्र, अध्यात्मक शास्त्र, मूल्यशास्त्र, सौन्दर्य शास्त्र, नीति शास्त्र तथा धर्म दर्शन आदि। इन दार्शनिक विज्ञानों के समस्त समस्याऐं दार्शनिक समस्याऐं हैं। दार्शनिक समस्याओं में दूसरे वर्ग के विभिन्न विज्ञानों के सामान्य समस्याओं को भी दार्शनिक समस्याओं के रूप में स्वीकृर किया जाता है। इस रूप में दर्शनशास्त्र विभिन्न विज्ञानों को

मूल मान्यताओं एवं उसके द्वारा प्राप्त निर्णयों की समीक्षा करता है। दर्शन इन समस्याओं तथा निष्कषों में समन्वय का कार्य भी करता है।

(2) **दार्शनिक दृष्टिकोण** – दर्शनशास्त्र की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए दार्शनिक दृष्टिकोण का उल्लेख करना भी अनिवार्य है। दार्शनिक दृष्टिकोण से, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पर्याप्त भिन्न है। इसकी मुख्य विशेषता है – आश्चर्य बोध, संदेह समीक्षा चिंतनात्मक, निष्कर्ष प्राप्ति के पर्याप्त धैर्य, तटस्पता तथा निरंतता।

(3) **दार्शनिक विधियाँ** – यह विधियाँ दर्शनशास्त्र के अध्ययन के लिए आवश्यक है, जिसमें से मुख्य है –आगमन विधि, निगामन विधि, विश्लेषण विधि, संश्लेषण विधि तथा द्वान्दात्मक विधि। इन विधियों को अपनाकर ही दार्शनिक अध्ययन होता है।

(4) **दार्शनिक प्रक्रिया** – दर्शनशास्त्र के प्रकृति को समझने के लिए दार्शनिक प्रक्रिया को भी जानना अनिवार्य है। सामान्य रूप में आश्चर्य, जिज्ञासा अथवा वर्त्तमान जीवन के प्रति अध्यात्मिक असंतोष से प्रेरित होकर ही दार्शनिक प्रक्रिया प्रारंभ हुआ करती है। दार्शनिक प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर भी हो सकती है तथा सामूहिक परिस्थिति में भी हो सकती है तथा सामाजिक स्तर पर भी, यह अकेले भी हो सकती है। तथा सामूहिक परिस्थिति में भी हो सकती है। दार्शनिक प्रक्रिया का एक निश्चित लक्ष्य होता है और वह लक्ष्य है – विश्व का एक सर्वागपूर्ण चित्र प्रस्तुत करना।

निष्कर्ष :

दर्शनशास्त्र के विभिन्न विधियों को अपनाकर विभिन्न दार्शनिक निष्कर्ष प्राप्त किए जाते हैं, इस प्रकार से प्राप्त निष्कर्षो में पर्याप्त भिन्नता होने पर भी इनका प्रभाव व्यक्ति, समूह तथा समाज के लिए जीवन पर अवश्य दृष्टिगोचर होता है। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि दार्शनिक समस्याओं, दार्शनिक दृष्टिकोण, दार्शनिक विधियों, दार्शनिक निष्कर्षो तथा व्यक्ति एवं समाज के सामान्य जीवन पर दर्शन में पड़ने वाले प्रभाव के कारण दर्शन की प्रकृति दार्शनिक है।

प्रो0 मुन्नी देवी
इतिहास विभाग
जी.सी.पी.ए. कॉलेज, छत्तरपुर